International Journal of Arts, Humanities and Social Studies
www.socialstudiesjournal.com
Online ISSN: 2664-8660, Print ISSN: 2664-8652
Received: 03-05-2022, Accepted: 05-06-2022, Published: 07-06-2022
Volume 4, Issue 1, 2022, Page No. 47-50

झुंझुनूं में कायमखानी शासन

Dr. Shatrujeet Singh
Associate Professor, Department of History, GCG RANIA, Sirsa, Haryana, India

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26648652.2022.v4.i1a.224

सारांश

यह ऐतिहासिक अध्ययन झुंझुनू पर कायमखानी राजवंश के शासन की जांच करता है, जो वर्तमान में राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र का हिस्सा है, जो विक्रम संवत 1503 (1446 ई.) से लेकर विक्रम संवत 1787 (1730 ई.) तक फैली समयरेखा पर केंद्रित है। शोध का प्राथमिक उद्देश्य झुंझुनू में कायमखानी शासकों के राजनीतिक कालक्रम, प्रशासनिक योगदान, आंतरिक विवादों और अंतिम पतन का पता लगाना है। ऐतिहासिक इतिहास, शिलालेख, वंशावली रिकॉर्ड और खय्याम खान रासा और तवारीख-ए-राजपूत कायमखानी जैसे साहित्यिक कार्यों का उपयोग करते हुए, यह गुणात्मक अध्ययन शासकों के अनुक्रम और उनके संबंधित प्रभावों को फिर से बनाने के लिए वर्णनात्मक-ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग करता है।

मुहम्मद खान से शुरू होकर, जिन्होंने झुंझुनू पर कायमखानी नियंत्रण स्थापित किया, राजवंश ने शम्स खान, फतेह खान, मुबारक शाह, कमाल खान और अन्य सहित विभिन्न उत्तराधिकारियों को देखा, जिनमें से प्रत्येक ने कस्बों, टैंकों और किलों जैसे बुनियादी ढांचे के माध्यम से क्षेत्र के विकास में योगदान दिया। आंतरिक शक्ति संघर्ष और बाहरी शक्तियों, जैसे लोदी सल्तनत और बीकानेर और जोधपुर राज्यों के साथ गठबंधनों ने राजवंशीय परिवर्तनों को गहराई से प्रभावित किया। विशेष रूप से, शम्स खान द्वितीय जैसे शासकों ने मुगल आधिपत्य स्वीकार कर लिया और अकबर के प्रशासन में मनसबदार के रूप में शामिल हो गए। फाजिल खान और उनके बेटे रूहला खान के कार्यकाल के दौरान राजवंश का कमजोर होना स्पष्ट हो गया, जिनकी प्रशासनिक अक्षमता और आंतरिक गुटबाजी ने शार्दुल सिंह शेखावत के उत्थान का द्वार खोल दिया।

कूट शब्द: झुंझुनूं, कायमखानी शासन, मुहम्मद खां, समस खां, फतह खां, मुबारक शाह, कमाल खां, भीखन खां

प्रस्तावना

मुहम्मद खां :- (विक्रम संवत् 1503 1504 ई0 1446 1477 ई.)

झुंझुनूं वर्तमान में शेखावाटी का एक जिला है जो भारत की राजधानी दिल्ली से 150 मील पश्चिम की तरफ हैं। विक्रम की 15 वीं सदी में यहाँ जोड़ चौहानों का राज्य था ।

- मुहम्मद खां क्याम खां का पुत्र था ।
- मुहम्मद खां ने विक्रम संवत 1503 में झुंझुनूं पर अधिकार कर लिया।

समस खां (विक्रम संवत् 1616 1642 ई0 1559 1585)

मुहम्मद खां की मृत्यु के बाद समस खां झुंझुनूं का नवाब हुआ। समस खां ने अपने नाम से झुंझुनूं से 5 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व दिशा में समसपुर नामक गांव बसाया । उसने समस तालाब, नौमहला आदि

बनवाए ।। । जैन कृति त्रिलोक्य दीपक प्रशास्ति के वर्णन से सिद्ध होता है कि विक्रम सवत् 1516 में समस खां झुंझुनूं में शासन कर रहा था । कायमखानी कल और आज के अनुसार समस खां की मृत्यु विक्रम संवत 1542 में हुई। तवारीख राजपूत कायमखानी के अनुसार समस खां के मुबारक खां, फतह खां, अहमद खां व हासम खां चार पुत्र थे। हासम खां के पुत्र हासमखानी व अहमद खां के पुत्र जमाल खां के वंशज जमालखानी कहलाते है ।

फतह खां (विक्रम संवत् 1542 1543 ई० 1485 1486)

समस खां के बाद उसका पुत्र फतह खां झुंझुनूं का नवाब हुआ। फतह खां की बहन का विवाह सुल्तान बहलोल लोदी से हुआ तथा वह स्वयं बहलोल का दामाद था। इस कारण वह अपने सौतेले भाई मुबारक को कुछ नहीं समझता था जो नूंआ का जमींदार था। उसने मुबारक खां को कुछ नहीं दिया । कायमखां रासा के अनुसार फतेहपुर के नवाब जलाल खां ने मुबारक शाह की सहायता की। जलाल खां ने झुंझुनूं पर हमला किया। फतह खां हार गया और मुबारक शाह को झुंझुनूं का नवाब बना दिया गया।'

मुबारक शाह :- (विक्रम संवत् 1543 1546 ई० 1486 1489)

मुबारक शाह ने 3 वर्ष शासन किया । "सब चिराग" पुस्तक में फतह खां के पुत्र मुहम्मद खां द्वारा मुबारक को कत्ल करना लिखा हैं।' मुबारक के तीन पुत्र कमाल खां, साहब खां एवं नासिर खां थे । मुबारक के बाद उसका बड़ा पुत्र कमाल खां झुंझुनूं का नवाब हुआ ।

कमाल खां (विक्रम संवत् 1546 1557 ई0 1489 1500)

कमाल खां के शासन काल में कोई विशेष उल्लेखनीय घटना नहीं हुई। इसके दो पुत्र थे । एक का नाम भीखन खां तथा दूसरे का नाम कबीर खां था ।

भीखन खां (विक्रम संवत् 1557 1569 ई0 1500 1512)

भीखन खां का साहिब खां के पुत्र मुहब्बत खां (नूआ) से मतभेद था और अन्ततः भीखन खां ने मुहब्बत खां को नूआं से निकाल दिया। इस पर मुहब्बत खां फतेहपुर के नवाब दोलत खां के पास गया जो उसका रिश्तेदार था। तब दोलत खां का पुत्र नाहर खां सेना लेकर झुंझुनूं पर आक्रमण के लिये आया। आबूसर के ताल में युद्ध हुआ। इस युद्ध में भीखन खां रणभूमि छोड़कर भाग गया।' फिर भीखन खां बीकानेर के राजा लूणकर्ण के पास सहायता के लिये गया । यद्यपि विक्रम सवत् 1569 वैशाख सुदी 7 को लूणकर्ण ने भीखन खां के लिये फतेहपुर पर आक्रमण किया। लेकिन दोलत खां ने लूणकर्ण को 120 गांव देकर सन्धि कर ली। इस प्रकार भीखन खां का यह प्रयत्न असफल रहा। झुंझुनूं में भीखन शहीद दरगाह है। प्रतीत होता कि वह झुंझुनूं का वापस लेने के प्रयास में मारा गया ।

मुहब्बत खां :- (विक्रम संवत् 1569 1605 ई0 1512 1548)

मुहब्बत खां नूआं के साबिर खां का पुत्र था। यह फतेहपुर के नवाब दोलत खां की मददसे झुंझुनूं का नवाब बना। मुहब्बत खां के समय बीकानेर के राजा लूणकर्ण ने विक्रम संवत् 1583 में ढोसी पर आक्रमण किया तब उसने झुझुनू आदि क्षेत्रों को लूटा और नजराना वसूल किया।

विक्रम संवत् 1598 में जोधपुर के मालदेव ने फतेहपुर व झुंझुनूं दोनों को अपने अधीन कर लिया और कूम्पा राठौड़ को जागीर में दे दिये तब मुहब्बत खां कुम्पा राठौड़ के अधीन जमींदार था । विक्रम संवत 1605 में

मुहब्बत खां ने मोहब्बतसर नामक गांव बसाया अतः इसका अन्तिम समय 1605 के आस पास मान सकते है।' हांलाकि कायमखानी कल और आज में मुहब्बत खां का अन्तिम समय विक्रम संवत 1600 लिखा है।

खिदर खां (विक्रम संवत् 1605 1620 ई0 1543 1563

मुहब्बत खां के बाद उसका पुत्र खिदर खां झुंझुनूं का नवाब हुआ। हालांकि कायमखानी कल और आज में खिदर खां को मुहब्बत खां का भाई लिखा हैं। (पृ० 177) पर यह सही नहीं है। क्याम खां रासा में खिदर खां को मुहब्बत खा' का पुत्र बताया गया है। (मुहब्बत खां सुत खिदर खां फदनखान के पास 1628) खिदर खां ने विक्रम संवत् 1609 में खिरदरसर गांव बसाया था।

बहादुर खां (विक्रम संवत् 1620 1622 ई0 1563 1565)

खिदर खां के बाद बहादुर खां झुंझुनूं का नवाब हुआ। कायमखानी कल और आज में बहादुर खां को महाबत खां का पुत्र बताया गया है। (पृ० 122) शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास में सूरजनसिंह ने झुंझुनूं के नवाब भीखन खां का पुत्र लिखा हैं। (पृ० 15.1) जगा की बही को अगर माना जाये तो बहादुर खां मुहब्बत खां का पुत्र ही था। क्रयाम खां रासानुसार बहादुर खां को नवाब बनाने में फदन खां फतेहपुर का विशेष योगदान था ।

समस खां द्वितीय (विक्रम संवत् 1622-1662 ई0 1565 1605)

बहादुर खां के बाद झुंझुनूं का नवाब समस खां हुआ। समस खां ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। वह शाही मनसबदार था। दस्तावेजों में नवाब समस खां जमींदार मनसबदार महाल झुंझुनूं लिखा जाने लगा। विक्रम संवत 1657 ई0 1600 में अकबर ने राणा अमर सिंह के विरूद्ध सेना भेजी इस अभियान में समस खां भी शामिल था ।समस खां प्रथम के समय का एक पट्टा जो नवाब समस खां द्वितीय ने विक्रम सवंत 1662 में नवीन किया था। इस पट्टे से मालूम होता है कि उसने कमालुद्धीन पीरजादे के पुत्रों शेख जमाल, शेख कुतुब और शेख मुजाविर को बाकरा गांव का पट्टा पुनः प्रदान किया था। इसके सुल्तान खां, मुबारक खां, लाल खां एवं आसिफ खां चार पुत्र थे ।

सुल्तान खां तथा वाहिद खां (विक्रम संवत् 1662-1728

समस खां द्वितीय के बाद सुल्तान खां और उसके बाद वाहिद खां झुंझुनूं के नवाब हुये । वस्तुतः इनके जीवन की घटनाओं का कोई वृतान्त उपलब्ध नहीं हैं। वाहिदपुर गांव वाहिदखां के नाम से बसा हैं।

सआदत खां (विक्रम संवत् 1728 1770 ई0 1671 1713)

वाहिद खां के बाद उसका पुत्र सआदत खां झुंझुनूं का नवाब हुआ। उसका एक पट्टा 25 शाबान हि० 1052 (विक्रम 1729) का प्राप्त है। उसके समय का एक शिलालेख झुंझुनूं में भगवान दास अग्रवाल द्वारा बनाये गये कुए की छतरी पर अंकित है। जिससे मालूम पड़ता है कि मंगसिर वदि 13 विक्रम 1739 में सईद खां (सआदत खा) नवाब था।

राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर में जयपुर अर्जदास्त में एक पत्र आमेर के अधिनकारी शिवदास व परागदास द्वारा महाराजा बिशन सिंह आमेर को भादवा द्वितीय वदि 9 विक्रम 1749 को लिखा गया, जिससे ज्ञात होता है कि सआदत खां बादशाह का फौजदार था ।

विक्रम संवत् 1771 में सरदार खां फतेहपुर ने झुंझुनूं की जमींदारी बादशाह से ले ली थी। मालूम होता है कि विक्रम 1770 के करीब सआदत खां की मृत्यु हो गयी थी तब कमजोर फाजल खां से सरदार खां ने झुंझुनूं की जमींदारी ले ली होगी। अतः अनुमानतः विक्रम 1770 के आस-पास सआदत खां की मृत्यु हो गयी थी।

नवाब फाजिल खां (विक्रम संवत् 1770 1778 ई० 1713 1721)

सआदत खां की मृत्यु के बाद उसका भाई फाजिल खां झुंझुनूं का नवाब हुआ । परन्तु विक्रम संवत् 1771 के लगभग सरदार खां फतेहपुर जो सैयद हुसैन अजी (बादशाह फरूखशियर का मीर बक्सी) का साला था को झुंझुनूं की जमींदारी व जागीरदारी दोनों मिल गयी थी। अब फाजिल खां सत्ताच्युत हो गया। इस समय के 6 वर्ष बाद जब 1776 ई० में मुहम्मदशाह बादशाह बना और दोनों सैयद बन्धु (अब्दुल्ला व हुसैन अली) मारे गये तब फाजिल खां की प्रार्थना पर उसे फिर झुंझुनूं की जमींदारी विक्रम संवत् 1778 ई0 1721 में मिली। लेकिन विक्रम संवत् 1778 में रूहेला की मोहर के कागजात मिलते हैं. इससे प्रतीत होता है कि बूढ़े नवाब ने अपने पुत्र रूहेला खां को विक्रम संवत् 1778 में झुंझुनूं का राज्य सौप दिया था। विक्रम संवत 1785 में फाजिल खां की मृत्यु हो गयी ।

रूहेला खां (विक्रम संवत 1778 1787 ई0 1721 1730)

रूहेला खां भी कोई योग्य शासक सिद्ध नहीं हुआ। उसने अपनी बेगम के कहने से शार्दूलसिंह शेखावत को झुंझुनूं बुलाया और उसे विक्रम संवत् 1778 में ही दीवान बना दिया । शार्दूलसिंह ने झुझुंनू राज्य की अच्छी व्यवस्था की। उदण्डी कायमखानियों का दमन किया। बाद में नवाब ने झुंझुनूं की सता शार्दुल सिंह को सौंप दी।इस प्रकार झुंझुनूं से कायमखानी शासन का अंत हो गया।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. प्रबन्ध कोष राजशेखर
2. सिधी जैन ग्रन्थमाला
3. भारत का इतिहास-डा. सत्यप्रकाश
4. पूर्व मध्यकालीन भारत-डा. रघुवीर सिंह
5. सोशल लाइफ इन मीडिवियल राजस्थान: डा. गोपीनाथ
6. सवाई जयसिंह वीरेन्द्रस्वरूप भटनागर
7. मरू भारती, पिलानी
8. क्रायमखां रासो महाकविजन: दशरथ शर्मा राजस्थान पुरात्व प्रकाशन जोधपुर 2010
9. माधव वंश प्रकाश (हस्तलिखित) वख्शी जूंचाराम
10. कबीला नागड़ मे. यासीन खां (हस्तलिखित)
11. एन्यूअल रिपोर्ट राजपूताना म्यूजियम 1932-33
12. जयपुर राज्य का भूगोल अनन्तलाल मुखर्जी जयपुर
13. राजपूताने का भूगोल भाग। पं. रामदीन
14. शेखावाटी प्रकाश-पं. रामचन्द्र भगवतीदत्त शास्त्री
15. एनल्स एण्ड ऐंटी क्वीराज आफ राजस्थान-कर्नल टाड
16. झुंझुनूं ठिकाने की पट्टा बही (उदक की जमीन के पट्टे)